B.A. (Hons) Part III
Philosophy Paper VII
Topic आकारिक तथा संवेगात्मक अर्थ
Dr. Sachidanand Prasad.
Dept of Philosophy
R.R.S. College, Mokama.

आकारात्मक अर्थ – प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के क्षेत्र में रुडोल्फ कॉर्नप का नाम भाषा का विश्लेषण करने वाले तर्कशास्त्रियों में सर्वप्रमुख है। कार्नेप ने प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र का गहन अध्ययन किया और अध्ययन से प्राप्त प्रनियमों के आधार पर तार्किक विन्यास के सिद्धान्त का निर्माण किया। कार्नेप ने आकारिक निगमनात्मक तर्कशास्त्र के अर्न्तगत विज्ञान के भाषागत वक्तव्यों के आकार का अध्ययन कर उसे आकारगत तर्कशास्त्र का नाम दिया। आकारगत तर्कशास्त्र के अर्न्तगत तर्कवाक्यों के परस्पर संबन्धो की व्याख्या की जाती है। इसप्रकार आकारात्मक अर्थ से आशय वाक्य के अंशीभूत शब्दों के अन्तः सम्बन्धों के अभिव्यक्ति करने से है। तर्कशास्त्र के अन्तर्गत दो विधियाँ हैं

1. आगमनात्मक तर्कविधि
2. निगमनात्मक तर्कविधि

आगमनात्मक तर्कविधि में अनेक तथ्यों, उदाहरणों आदि का निरीक्षण कर, तुलना तथा वर्गीकरण करके इन नियमों पर पहुंचते हैं।

(a) ज्ञात से अज्ञात की ओर।
(b) स्थूल से सूक्ष्म की ओर।
(c) विशिष्ट से सामान्य की ओर।

इसके ठीक विपरीत निगमनात्मक तर्क विधि में सामान्य से विशिष्ट की ओर जाते हैं और गणितीय विश्लेषण के द्वारा सामान्य से विशिष्ट नियम निकालते हैं। इस विधि में इन नियमों पर पहुंचते हैं।

(a) सामान्य से विशिष्ट की ओर।
(b) सूक्ष्म से स्थूल की ओर।

संवेगात्मक अर्थ:- तर्कशास्त्रीय विश्लेषण के अन्तर्गत, तर्कवाक्य में निहित भाव को अभिव्यक्ति को वाक्य का भावात्मक अर्थ कहते हैं क्योंकि वस्तु के गुण या भाव को शब्द ही स्पष्ट करते हैं। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि शब्दों का भावात्मक आशय, उनके वाक्य में स्थान द्वारा निश्चित होता है क्योंकि शब्दों में स्थान परिवर्तन के आधार पर वाक्यों का भावार्थ भी परिवर्तित हो जाता है भावात्मक अर्थों को व्यक्त करनेवाले वाक्य व्याकरण की दृष्टि से निम्नलिखित हैं- आज्ञार्थक वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, निश्चयार्थक वाक्य, इच्छाबोधक वाक्य और उत्कोशात्मक वाक्य।